PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

ऐन समय पर

Authors: Himadri Das, Veena Prasad
Illustrator: Ankitha Kini
Translator: Manohar Notani

ख़र्रर्रर्र...

“अरे नहीं,” श्याम बुक्का फाड़ रोता है।
उसकी प्यारी कमीज़ की सिलाई उधड़ गई है।
“दादा जी, अब मैं इसे कभी नहीं पहन पाऊँगा!”

“बिलकुल पहन सकोगे, लल्लू,” उसके दादा कहते हैं।
“हम इसे अभी ठीक किए देते हैं।”

दादाजी एक सुई, नीले रंग के धागे की एक रील लेते हैं।
वह श्याम को दिखाते हैं कि किस तरह उधड़ी
सीवन को सीकर वापस जोड़ा जा सकता है -
एकदम पहले जैसा।

श्याम की दोस्त श्रीषा घर आयी हुई है।
वह कहती है, “चलो साइकिल चलाएँ।”
“एक मिनट,” श्याम ने कहा। “पहले मैं ज़रा अपनी कमीज़ पर इस्तिरी कर लूँ।”

वह इस्तिरी का स्विच चालू करता है। लेकिन ये क्या, उसकी लाइट तो जल ही नहीं रही,
और इस्तिरी है कि ठंडी की ठंडी पड़ी है।

“उफ्फ! अब मुझे ये मुड़ी-तुड़ी कमीज़ ही पहननी पड़ेगी,” श्याम बुड़बुड़ाता है।

ऐसे में श्रीषा कहती है, “पिछले हफ्ते मैं रिपेयर मेले में थी। मेरे भाई के कॉलेज में
कैमिस्ट्री पढ़ाने वाले जॉर्ज अंकल वहाँ एक इस्तिरी ठीक कर रहे थे! मैंने उन्हें
यह काम करते हुए बड़े ध्यान से देखा। चलो कुछ कोशिश करते हैं! तुम्हारे पास स्क्रूड्राइवर
है?”

श्याम अलमारी खँगालता है और एक स्क्रूड्राइवर खोज निकालता है। स्क्रूड्राइवर से श्रीषा इस्तिरी के पीछे का हिस्सा खोल देती है।

“इस तार को देखो। जब भी तुम पॉवर स्विच ऑन करते हो, बिजली का करंट इस तार से होकर गुज़रता है जिसके चलते अपनी इस्तिरी गरम हो जाती है। इस प्रक्रिया को कंडक्शन कहते हैं,” श्रीषा बताती है।

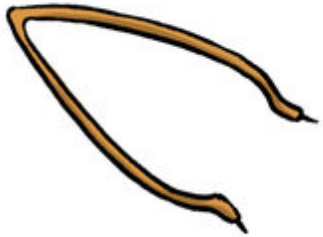

“और इस छोटी चीज़ को थर्मोस्टेट कहते हैं। यह इस बात का ध्यान रखता है कि इस्तिरी ज़रूरत से ज़्यादा गरम न हो जाए। और अगर इस्तिरी का ताप बढ़ जाता है तो यह बिजली के बहाव को रोक देता है। लाल बत्ती बुझ जाती है और जब इस्तिरी ठंडी पड़ने लगती है तो बिजली का करंट फिर से बहने लगता है और लाल बत्ती जलने लगती है।”

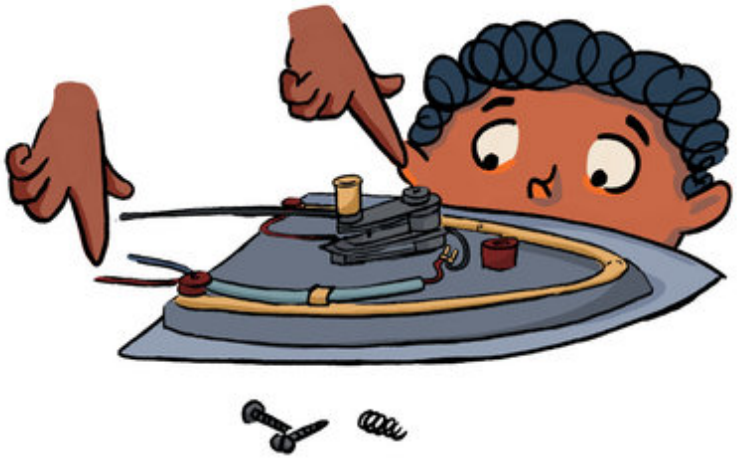

“फिर तो बिजली से चलने वाले बाकी उपकरण भी इसी तरह से काम करते होंगे;
नहीं क्या? गीज़र, विद्युत-केतली, ओवन आदि?”

लेकिन ये क्या! श्रीषा का ध्यान तो कहीं और है; उसके कान पर तो जूँ भी नहीं रेंग रही।
वह तो इस्तिरी के भीतर अपनी आँखें गड़ाये हुए है।

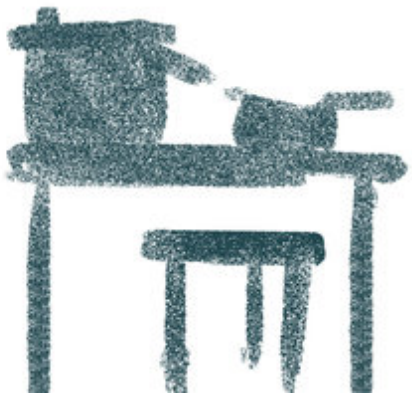

“कुछ गड़बड़ है?” श्याम ने पूछा।
“मुझे नहीं लगता कि इसे ठीक करना मेरे बस की बात है।”
“अरे! फिर तो इस बात का पता चलने पर अप्पा और अम्मा हमें खूब डाँटेंगे!”
“हम इसे ठीक कराने के लिए रिपेयर मेले लेकर जाएँगे।”

इसके पहले कि अप्पा-अम्मा आ जाएँ और इस्तिरी का हाल जानें,
दोनों बच्चे अपनी-अपनी साइकिलों पर बैठ उस खराब इस्तिरी को
ठीक कराने के लिए रिपेयर मेले चल देते हैं।

श्रीषा, अनुपमा आंटी से पूछती है, “आंटी क्या आप हमारी यह इस्तिरी ठीक कर देंगी?”

“क्या गड़बड़ हो गयी इसमें?”

श्रीषा बोली, “चालू नहीं होती।”

अनुपमा आंटी ने एक छोटा सा बक्सा खोला जिसमें कई किस्म की तारें भरी हुई थीं। “यह एक मल्टीमीटर है,” आंटी कहती हैं।

“इससे यह पता चलता है कि इस्तिरी के सभी हिस्सों में से करंट बह रहा है कि नहीं। चलो प्लग से शुरू करते हैं।”

इसके बाद आंटी इस्तिरी के सारे हिस्सों की जाँच करते-करते एक छोटे से तार पर पहुँचती हैं।

“प्लग के ठीक बाद यह छोटा तार दिख रहा है? यह टूटा है। वैसे ऊपर से यूँ देखने पर तो इसमें कुछ गड़बड़ नज़र नहीं आती - लेकिन ठीक यहीं गड़बड़ है!”

वह पुराने प्लग को काट कर अलग करती हैं और तार के साथ
एक नया प्लग जोड़ देती हैं।

बस, पहले का अधूरा सर्किट अब पूरा हो जाता है।

“चलो इसकी टेस्टिंग करके देखते हैं!” ज्यों ही वह स्विच ऑन
करती हैं, बल्ब जलने लगता है!

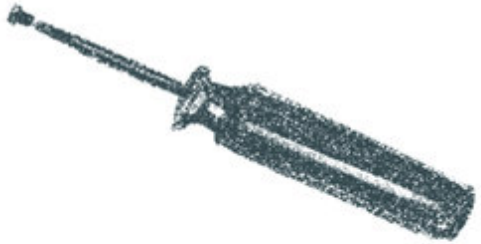

रिपेयर काम देखने और उसका पैसा चुकाने के बाद वे घर लौटने की ठानते हैं।

“अरे, इसका तो पिछला टायर पंचर है। चलो, पंचर ठीक कराने मणिगंदन अन्ना के पास चलते हैं!” श्रीषा बोली।

“अरे पंचर कौन सी बड़ी बात है,” मणिगंदन अन्ना ने कहा। पड़ोस में ही उनकी छोटी सी साइकिल रिपेयर की दुकान थी। उन्हें भी रिपेयर मेला से बुलावा आया था।

बस फिर क्या था, मणिगंदन अन्ना ने साइकिल को उल्टा खड़ा किया - सीट और हैंडल के बल। टायर-लीवरों के एक जोड़े की मदद से उन्होंने टायर को साइकिल रिम से अलग किया, और फिर उसमें से ट्यूब को बाहर निकाला।
वह बच्चों से पूछते हैं, “क्या आप लोगों को इसमें कहीं कोई छेद दिखता है?”
उन्हें छेद नहीं दिख रहा।
इस पर वह पूछते हैं, “तो फिर हमें कैसे पता चलेगा कि पंचर कहाँ है?”
बच्चे पूछते हैं, “कैसे... कैसे?”

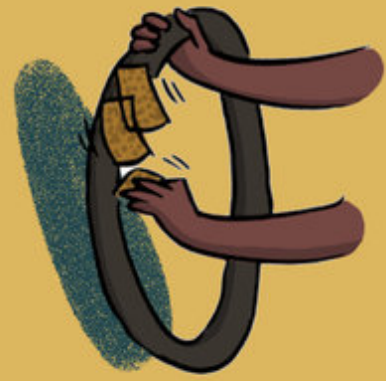

तिस पर मणिगंदन अन्ना पानी से आधे भरे एक टब में ट्यूब को पानी में
डुबोए हुए उसे इस तरह घुमाते चलते हैं ताकि उसका हर हिस्सा बारी-बारी से
पानी में डूबे। एक जगह आकर, वे लोग छोटे-छोटे बुलबुले उठते हुए देखते हैं।

“देखा? यहीं पर ट्यूब में पंचर है!”

तब वह एक पुरानी रखी ट्यूब में से रबर का एक छोटा टुकड़ा काटकर निकालते हैं।
छेद के आसपास ट्यूब को पकाकर रेगमार से वह उसे समतल करते हैं।
इसके बाद वह ट्यूब के उस हिस्से और पुरानी ट्यूब से काटे गये
रबर के उस पुराने टुकड़े पर रबर गोंद लगाते हैं।

“आओ इसे सीलबंद करें,” वह कहते हैं।

श्याम रबर के टुकड़े को छेद पर रखता है और ज़ोर से उसे नीचे की ओर दबाता है।

श्याम कहता है, “अगर साइकिल, छाता, जूता और दूसरी चीज़ें ठीक करने वाले पेशेवर मरम्मत करने वाले न होते तो पता नहीं हमारे चारों ओर कबाड़ का न जाने कितना बड़ा पहाड़ बन जाता!”

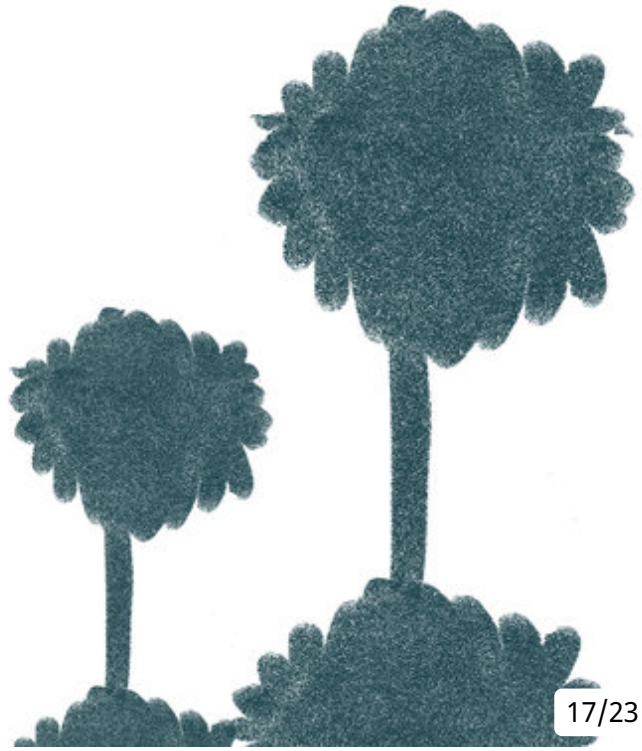

टायर ठीक हो गया,
इस्तिरी भी ठीक हो गयी और
लौट के बुद्धू घर को आये।
और क्या चाहिए भला!

फेंको नहीं, काम में लाओ!

हमें इन्सानों द्वारा पैदा किये गये कभी-न-ख़त्म-होने-वाले कबाड़ को कम करने की सख्त ज़रूरत है। ऐसे में, हमें ‘बनाओ, बचाओ और काम-में-लाओ’ वाली हमारी परंपरा को जारी रखते हुए ‘लो, बनाओ और फेंको’ के चलन को छोड़ना होगा।

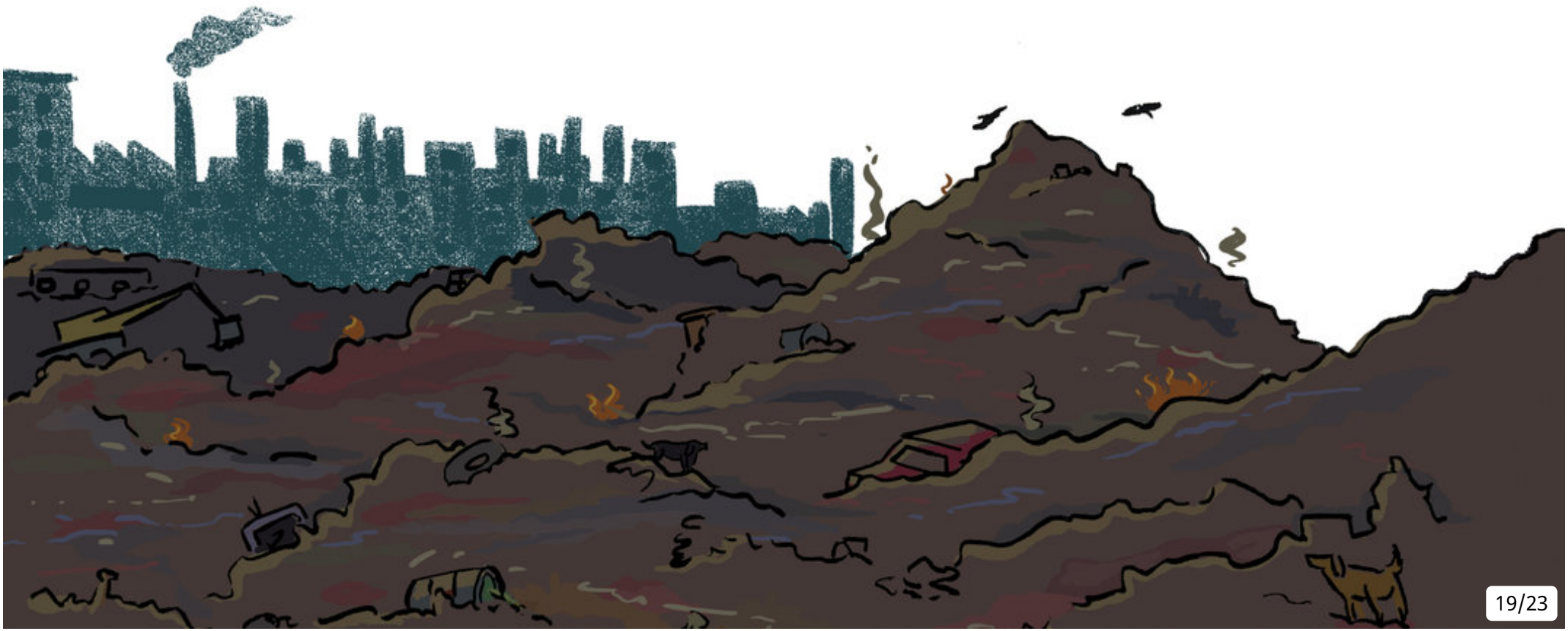

हमारी चीज़ों में इस्तेमाल होने वाले सारे कच्चे माल का खनन करने और उत्पादकों के हिसाब से उनके प्रसंस्करण में बहुत ऊर्जा खर्च होती है। जबकि मरम्मत करने में इन संसाधनों का संरक्षण होता है और किसी भी उत्पाद का जीवन बढ़ जाता है। मरम्मत न हो सकने की सूरत में ही हमें उसका पुनः चक्रण यानी री-साइकल करने के बारे में सोचना चाहिए।

पुनः चक्रण की परंपरा

भारत में पुनः चक्रण यानी री-साइक्लिंग की परंपरा बहुत मज़बूत रही आयी है, फिर चाहे वह खाने-पीने की चीज़ों जैसे जैविक कचरे को लेकर हो या फिर कपड़ों जैसे अजैविक कचरे की बात हो। हालाँकि उनकी तादाद में कमी तो आ रही है, इसके बावजूद भारत में आज भी कबाड़ी वाले आते हैं जो घरों से पुराने अखबार वग़ैरह के साथ-साथ पुनः चक्रित की जा सकने वाली प्लास्टिक इत्यादि की चीज़ें ले जाते हैं। इसके अलावा, ऐसे फेरीवाले भी होते हैं जो घर-घर जाकर पुराने कपड़े लेते हैं और उनके बदले स्टील आदि के नये बर्तन दे जाते हैं।

रिपेयर कैफे

इस कहानी की प्रेरणा ‘रिपेयर कैफे’ बेंगलुरु से मिली है। ‘रिपेयर कैफे’ नि:शुल्क कार्यशालाएँ संचालित करता है जहाँ अलग-अलग उम्र वाले लोग एक साथ होते हैं और चीज़ों की मरम्मत करने की परंपरा जीवित रखते हैं। ‘रिपेयर कैफे’ में आपको वे सारे औज़ार और ऐसी सारी सामग्री मिल जाएगी रिपेयर करने में जिनकी ज़रूरत आपको जब-तब पड़ती रहती है। इन कार्यशालाओं में पेशेवर और शौकिया स्तर के मोची, छाता सुधारने वाले, कपड़े सिलने और उनमें फेरबदल करने वाले दर्जी और घड़ी सुधारने वाले लोग कार्यशालाओं में मरम्मत का काम सीखने आने वाले लोगों के साथ मिलकर काम करते हैं।

किसी भी प्राकृतिक आपदा के बाद मरम्मत पेशेवरों की माँग बढ़ जाती है। ऐसे समय में, सामुदायिक मरम्मत कार्यशालाएँ काफी उपयोगी होती हैं। रिपेयर कैफे, बेंगलुरु के ज़रिए तीन साल से भी कम की अवधि में कुल जमा २००० किलो से भी ज़्यादा वज़न की चीज़ों को कूड़े के ढेर में जाने से रोका गया। अकेले २०१७ में ही, दुनिया भर के रिपेयर कैफेज़ ने मिलकर ३ लाख चीज़ों को कूड़े का ढेर बनने से बचाया है।

क्या आपने इनमें से किसी भी औजार का इस्तेमाल किया है?

अगर नहीं, तो किसी से इनका इस्तेमाल करना सीखिए।
यह एक कौशल है जो ताउम्र आपकी मदद करेगा।

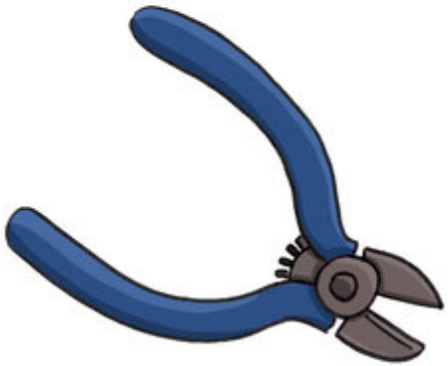

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: ऐन समय पर is translated by Manohar Notani . The © for this translation lies with Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'A Stitch in Time', by Himadri Das, Veena Prasad . © Pratham Books , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Ain Samay Par' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development of this book has been supported by CISCO. www.prathambooks.org. Guest Editor for the original story: Mala Kumar

Images Attributions:

Cover page: Girl and boy sew up Earth, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Boy upset at the sight of his torn shirt, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Man sewing a cloth, a boy behind him looks on curiously, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Bicycle, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Girl holds up a screwdriver, boy holds an iron box, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Boy looks at the inner workings and machinery of an iron box, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Tools everywhere, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Girl holds up a broken iron box, boy looks very scared by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A Repair Mela or Repair Café in progress, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Woman holds up a multimeter and iron box, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: Woman fixes iron box, two children look at the process carefully by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Two tools, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: People selling their wares, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: An air pump in the corner, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Two children look at a man holding up a cycle tube, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Steps of fixing a tyre puncture, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Two trees in the evening light, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Two children cycle together, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: A landfill scene, industries on the horizon, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Landfill with factories far away, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: Kabadiwala's shop, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: Five tools, by Ankitha Kini © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

A Corporate Social Responsibility Initiative

The development of this book has been supported by CISCO.

ऐन समय पर

(Hindi)

अभी तो सुबह शुरू ही हुई है और श्याम के चेहरे पर बारह बज रहे हैं - एक के बाद एक चीज़ें गड़बड़ाती जा रही हैं। उसकी मित्र उसे रिपेयर मेला लिए जा रही है जहाँ सारी चीज़ें दुरुस्तर की जाती हैं।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.
This page is added for identification.